तृतीय अध्याय

जयप्रकाश कर्दम के काव्य में दलित जीवन

तृतीय अध्याय

जयप्रकाश कर्दम के काव्य में दलित जीवन

प्रस्तावना : :

भारतीय समाज व्यवस्था का शोषित एंव उपेक्षित अंग दलित समाज है। दलित समाज सदियों से उच्चवर्ग द्वारा पीड़ित है तथा उच्च वर्ग का दास बनकर उनकी सेवा कर रहा है। सवर्ण लोग दलितों का सदियों से शोषण करते आये है, लेकिन दलित समाज इसे अपना नशीब मानकर चुप बैठता है और इस शोषण को सहन करता है। भारतीय समाज रूढ़ी-परंपराओ से बंधा हुआ है। इन रूढ़ि तथा परंपराओ के कारण ही समाज में अंधश्रध्दा बढ़ रही है। धार्मिक रूढियों को विरोध करने से धार्मिक विश्वासों को धक्का पहुँचता है। इसी कारण रूढ़ियों का पालन धार्मिक अंधविश्वासों और सामाजिक दबाओं के कारण दलित लोग विकास की ओर नहीं बढ़ रहे हैं। दलित समाज इन्ही परंपराओ और रूढियों का शिकार बनता नजर आता है।

समाज और साहित्य का परस्पर संबंध होने के कारण साहित्य में दलित, निम्नवर्ग, किसान, मजदूर, विधवा, परित्यक्त्या नारी को स्थान प्राप्त हुआ। सवर्ण समाज दलितों के ऊपर बल तथा धन के जोर पर अन्याय करता है। 'डॉ.नगमा जावेद' लिखती है- "दलित साहित्य, शोषित, पीडित, उपेक्षित, दलित जीवन का आक्रोश, आत्माओं का क्रंदन, व्यथा एवं वेदना है।"[1]

जयप्रकाश कर्दम उन दलित रचनाकारो में है, जिन्होंने दलित समाज का यथार्थ वर्णन अपने साहित्य में किया है। दलित समाज और उनकी समस्याओं को समझकर उन्हें बारीकी और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत कर हिंदी साहित्य के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान सिद्ध कर दिखाया है। जयप्रकाश कर्दम ने अपने काव्य-संग्रहों

---

1. संपा. रतनकुमार पाण्डेय - अनभै 2004 - पृष्ठ - 74

में दलित समाज की यथार्थता को विवेचित एवं विश्लेषित किया है। जयप्रकाश कर्दम ने अपने काव्य-संग्रहों में दलित समाज जीवन का चित्रण अत्यंत सूक्ष्मता के साथ किया है।

उच्चवर्गीय समाज की जातिवादी मानसिकता के कारण दलित अपमान, उपेक्षा, नफरत, और शोषण की जिंदगी जी रहा है। सवर्णो द्वारा दलितों के साथ अन्याय एवं अत्याचारपूर्ण व्यवहार किया हुआ नजर आता है। सवर्णो द्वारा सामाजिक जीवन से अलग कर देने के कारण दलितों की आर्थिक स्थिति दयनीय है। इसका चित्रण कर्दम ने अपने काव्य-संग्रह में अच्छी तरह से किया है। आधुनिक सभ्यता के नाम पर दलित मानव की उपेक्षा दिन-प्रतिदिन बढती ही जा रही है। उपेक्षित अस्पृश्य मानव अपनी मनुष्यता खोकर स्वार्थ, लालच, युध्द, हिंसा एवं गुलामी आदि का शिकार बनता नजर आता है। जयप्रकाश कर्दम ने दलितों के इस दयनीय स्थिति का एंव उनकी उपेक्षा का चित्रण बडी कुशलता के साथ किया है।

जयप्रकाश कर्दम की कविताओं में परिवर्तन की गूँज नजर आती है।वे बदलाव के लिए उत्सुक दिखाई पडते है।इनके कविताओं को पढने से एहसास होता है कि, इन कविताओं में कहीं न कहीं दलित अपने पावों पर खडा है। इन कविता संग्रहों में कवि को बदलाव की तलाश है।

मराठी साहित्य में दलित साहित्य एक प्रभावी विधा के रूप में उभर रहा है। हिंदी मे ऐंसी कोई प्रभावी धारा दिखाई नही देती। मगर आजादी के पश्चात् परिवर्तित मान्यताओं के कारण हिंदी साहित्य में दलितों का जीवन-चित्रण, दलितों की अस्मिता के दर्शन यत्र-तत्र दिखाई देता है। आलोच्य काव्य-संग्रहों में कवि ने दलितों का जीवन, आवास-व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था, समाज से अपमानित जिंदगी, शोषण आदि को चित्रित किया है। आजादी की प्राप्ति, संविधान एवं कानून की सहायता, राजनीतिक, सामाजिक संगठन का कार्य अम्बेडकर, महात्मा फुले, शाहू महाराज जैसे व्यक्तियों के विचार तथा कार्य के प्रभाव के परिणाम स्वरूप दलित समाज अपने अधिकारों के प्रति

सजग हुआ। इन कविता संग्रहों में दलित जीवन उनमें उत्पन्न हुई चेतना, शिक्षा, प्रसार की भावना, प्रबल होने वाली संगठन की प्रवृत्ति का चित्रण हुआ है।

3.1 कविता संग्रह - गूंगा नही था मैं :

जयप्रकाश कर्दम का यह पहला कविता-संग्रह है। इसका प्रकाशन **1999** में हुआ। इस कविता संग्रह में समाज में व्याप्त विषमता एवं जातिभेद का चित्रण किया है। उपेक्षित एवं दलित वर्ग के दुख-दर्द को काव्य रूप दिया है। इसमें निम्न लिखित कविताएं है।

3.1.1 किले :

प्रस्तुत कविता में एक अछूत व्यक्ति की मेहनत एंव चेतना के दर्शन होते है। ब्राम्हण, ठाकूर, सेठ आदि की शान के पीछे, तिजोरी, खेत, खलिहान, कल कारखाने आदि फलने-फूलने के पीछे उस अछूत व्यक्ति की मेहनत है ।उसकी हिंसा, अपमान, असमानता और अन्याय के किले उस व्यक्ति की आँखों में गडते है। इन किलों में उसकी यातनाओं से फानूस सजे है, उसके खून में उनके ध्वज रंगे है। किलों की दीवारों पर उसके दमन और कारूण्य की गाथाएँ खुदी है। सवर्णो की दहलीजों में उसका वजूद दफन है।

धनीयों के चौबारों पर उसके आँसुओं के दीप जलते है। इनके शयनकक्ष में उसकी बहनों, बेटियों की कुचली गयी अस्मिता के निशान है। उनकी रंगशालाओं में उसकी वेदनाओं का संगीत गूँजता है। उसके अस्तित्व का धुआँ इनकी चिमनियों से निकलता है। उनकी महफिलों में उसकी बर्बादियों का जश्न मनाया जाता है और उसके माथे पर अस्पृश्यता की लकीर खींची गयी है। कभी-कभी उसे लगता है, इन किलों को नष्ट-भ्रष्ट और उनका वजूद चिन्दी-चिन्दी करूँ ताकि उसके अंदर की अपमान की धधकती हुई आग शांत होकर उसके मन को सकून मिल जाए। उसका मन यह नहीं मानता कि वह ऐसा करे, उसकी चेतना उसके कदम रोक लेती है। पूर्वजों की सीख बेड़ी

बनकर हिंसा का जवाब हिंसा नहीं है, यह बताती है। पर आज तक किसने हिंसा को महत्व दिया है ? अहिंसा तो मौहल्ले के रास्ते पर पड़ी कुतियाँ है, जिसे हर कोई दुत्कारता है, वह अहिंसा के कारण प्रतिवाद नहीं करती, यह मुझे पता है। उसे भी कायर और कमजोर समझा गया है, तभी तो उसपर आज भी जुल्म और अन्याय हो रहा है। इतिहास गवाह है कि हिंसा का अट्टाहास अहिंसा को रौंदता आया है। परंतु आज उसकी भी भुजाएँ फडकने लगी है। फावडा, कुल्हाडी और हथौडा पकडे हुए उसके हाथ उन हाथों को काटकर फेंकना चाहते है। जिन हाथों ने उसकी नंगी पीठपर अनगिनत कोडे बरसाएँ हैं, उसके हाथ का कौर छिनकर उसे भूखें बाज के नुकीले पंजों से नोचते आए है और मांस डकारते आए है। अगर आगे भी उसके दमन और शोषण का हाल ऐसा ही रहा तो उसके हाथ भी उनके खिलाफ जरूर हरकत कर सकते है।

3.1.2. आरक्षण :

सरकारी नौकरियों तथा मेडिकल एवं इंजीनियरिंग कॉलेजो में दलितों का प्रवेश सवर्णो कों खटकता है। दलितों की उपलब्धियाँ, प्रमोशन, सवर्णो को अनुचित लगता है। परंतु क्या केपिटेशन फीस अर्थात रिश्वत देकर एडमिशन लेना कहाँ तक उचित है ? मंदिरों की मोटी कमाई पर ब्राम्हणों का एकाधिकार कहाँ तक उचित है? पर गैर सरकारी संस्थाओं में केवल सवर्णो का नियोजन कहाँ तक उचित है? क्या यह सब आरक्षण नहीं है? फिर दलितों के आरक्षण का ही विरोध क्यों होता है? क्योंकि सब सवर्णो के लिए हो तो उचित है, अगर उसमें दलितों का हिस्सा हो तो अनुचित होता है। अर्थात हर स्थान पर सवर्णो का आरक्षण उचित माना जाता है और दलितो का अनुचित। सवर्णो को हराम का हलुवा उचित है तथा दलितों को इमानदारी और मेहनत से पाई रोटी भी अनुचित मानी जाती है। सवर्णो का पूरा मख्खन और दलितों को छाछ तक देने की उनकी इच्छा नहीं। कविता का पात्र दलित व्यक्ति चेतावनी देता है, अब ऐसा नही होगा। अब तक बहुत हुआ। अब हर एक क्षेत्र में समान रूप से हिस्सेदारी

होगी। शासन प्रशासन के नाम से लेकर मैला ढोने, जूती गांठने और झाड़ू लगाने तक के काम में भी समानता बरती जाएगी।

3.1.3 तुमने कहा :

प्रस्तुत कविता में सवर्णों की स्वार्थी, पदलोलुप, लालची, ढोंगी प्रवृत्ति का पर्दाफाश किया है। सवर्णों ने कहा था कि ईश्वर परम पद है, उसकी प्राप्ति चरम उपलब्धि है।ईश्वर दरिद्रता में निवास करता है, दीन-दलित ही ईश्वर की सच्ची संतान है इसीलिए वह 'हरिजन' है, 'दरिद्र नारायण' है। दलित ईश्वर के प्रिय होने के कारण ई श्वर उनसे प्रसन्न रहता है। सवर्ण कहते है कि कोई भी काम छोटा-बडा नहीं होता। छोटा काम करने पर ही व्यक्ति अधिक बडा बनता है। जो दूसरों की सेवा करता है वह पुण्यकाम करके स्वर्ग में पहुँचता है। मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है। सवर्णो के इन वचनों को दलितों ने पूरी तरह निभाया, उनकी सेवा धर्म मानकर की। हजारों सालों यह सेवा कर्म करते हुए दलित दमन और दारिद्रय में जी रहे हैं, हरिकृपा को प्राप्त करते रहे हैं। दलित व्यक्ति कहता है कि सवर्णो की महानता इस बात में है कि वे दलितों को परमानंद का अमृत देकर वे स्वंय तुच्छ, मिथ्या जीवन वैभव एवं संपन्नता से भरे जीवन का जहर पी रहे है, स्वंय डूबकर दलितों को भवसागर तरा रहा है, शासन कर रहे है। दलित जानते है कि सवर्ण अपने लिए कभी कुछ नही चाहेंगे दलितों को अमृत देकर स्वयं जहर पीते रहेंगे लेकिन दलित कृतघ्न नही है सवर्णो के महान काम के बदले में वे उनके लिए कुछ करना चाहते है जो दलितों ने किया है वह सवर्णो को करना होगा।

3.1.4 वर्णवाद का पहाड़ :

प्रस्तुत कविता में मास्टर जी की वर्णवादी प्रवृत्ति के दर्शन होते है। उन्होंने दलितों को पढ़ा लिखाकर आदमी बनाया ताउम्र यह काम वे करते रहे। पढ़ाई के साथ दुनियादारी की बातें भी सिखायी। दलित छात्रों के मन में उनके लिए कितनी श्रध्दा और सम्मान था। उनकी सेवा करना सबको अपना धर्म लगता। उनका काम पहले कौन करेगा, इस बात पर छात्रों में झगड़ा होता। मास्टर जी की चिलम भरने से लोटा भरने का

काम दलित छात्र सश्रद्ध करते। परंतु उन्होंने दलित छात्रों को पीने का पानी भरने का काम नहीं करवाया वह हमेशा सवर्ण छात्र करते रहे। उन्नति का मार्ग दिखाने के बावजूद मास्टर जी समता के मार्ग पर नहीं चल सके। जातिगत संकुचित भावों से अलग नहीं रह सके। भाईचारा राष्ट्रीयता आदि के पढ़ाने के बावजूद वर्णवाद का पहाडा मास्टर जी पढ़ाना नहीं भूले। जातिय संकीर्णता के दर्शन मास्टरजी के द्वारा यहाँ होते है।

3.1.5 दासता :

प्रस्तुत कविता में दासता का वर्णन किया है। आर्य-अनार्य के युद्ध में दलितों के पूर्वजों ने पराजित होने पर स्वेच्छा से गुलामी का स्वीकार किया था। मौत के बदले में हजारो सालों से उनकी हर एक पीढी अमानवीय यातनाओ को झेल रही है। अब तक कई बार युद्ध हुए है। शक, हूण, मुगल तथा अंग्रेजों के साथ परंतु इनमें से किसी ने भी इतना घिनौंना व्यवहार नहीं किया है। अगर वे चाहते तो सवर्णों को भी अनंत यातनाएँ झेलने के लिए बाध्य करते। तुम्हारे साथ भी अस्पृश्यता का व्यवहार कर सकते थे, तुमसे भी गुलामी करवा सकते थे। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया क्योंकि जीत के उन्माद में वे तुम्हारे समान अंधे नही हुए थे उनमें अभी-भी मनुष्यता बाकी थी।

3.1.6 बेमानी है आजादी :

प्रस्तुत कविता में हर एक क्षेत्र में दलितों कों खदेड़ने की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है। दलित आज भी नए कपडे पहनकर घर से निकल नहीं सकते, उनकी बारात कभी घोडी पर नहीं निकलती। दिन रात मेहनत के बाद की उसे फाके की रात बितानी पडती है। वो आज भी सवर्णो के सामने बैठकर मुँह उठाकर बात नहीं कर सकता। साठ साल के बुढे को भी सवर्ण बच्चे को 'बाप' कहकर मिमियाना पडता है। वो अपनी इच्छा से, पसंद से कहीं काम नहीं कर सकता। बाप दादाओं के छोटे से कर्ज के बदले में उसे अपनी पूरी जिन्दगी साहूकार के नाम करनी पडती है। उसके लिए गाँव की पंचायत ही सुप्रीम कोर्ट है। जो स्वराज्य में भी गुलामो से बदतर जिंदगी जी रहा है। दस-पाँच रूपए देकर, दारू पिलाकर, कभी बंदुक के डर से उसे चुनाव स्थल तक पहुँचने नहीं दिया

जाता। न उसने मतपत्र देखा है और न कभी मतदान किया है। सार्वजनिक स्थल उसके लिए आज भी निषिद्ध है। शासन, सत्ता, आजादी, लोकतंत्र मे सब उसके लिए बेमानी है।उसके लिए संसद, संविधान,नीति, धर्म, अध्यात्म ये सब व्यर्थ है। उसे समाज मे बस रोटी और सम्मान चाहिए।

3.1.7 मेरी चाह :

प्रस्तुत कविता में एक दलित युवक समता के पथ पर चलने की चाह व्यक्त करता है। भाग्य और भगवान का वास्ता देकर निष्काम कर्म के ढकोसले में उसे चेतनाहीन बना दिया है। उसकी जिन्दगी पर पीड़ाओं के निशान मौजूद है वे आज भी कसकते है।उसकी अज्ञान, भोलापन, संयम आदि पर वे चीखते है। परंतु दलित व्यक्ति को आज इन पीड़ाओं को सहना, अन्याय और अपमान की घोट पीना असहय हो गया है। उसके आगे वह घृणा का जहर अब और नहीं पीना चाहता। ढलते सूरज के समान न बनकर उदय होता हुआ सूरज बनना चाहता है। अज्ञान के अंधकार से निकलना चाहता है। अज्ञान और असमानता के गलियों से निकलकर समता के पद पर चलने की उसकी चाह है।

3.1.8 अस्वीकृति :

प्रेमचंद का बहुचर्चित उपन्यास 'गोदान' की चमार नारी पात्र 'सिलिया' को यहा संबोधित किया है कि वह बडी भोली है। जिस मातादीन को वह अपार प्यार करती है, देवता मानकर उसका नाम जपती है। उसके लिए बड़ा सा बड़ा समर्पण कर सकती है। वह बहुत ही फरेबी और धोखेबाज है, वह किसी बाज से कम नहीं है। सिलियां को विश्वास है कि उसका पति उसे एक दिन अपनाएगा घर ले जाएगा। इस भ्रम से सिलियां को निकलने के लिए कवि ने कहा है। क्योंकि वह उसके शरीर से खेलकर, शोषण करके, रखैल बनाकर ही रख सकता है। दुल्हन का अधिकार वह नहीं देगा। कभी किसी दबाव में आकर वह तुमसे शादी करता भी है, तो तुम्हे उसके घर में वह स्थान नहीं मिलेगा जिसकी तुम हकदार हो। तुम्हारी उस घर में नौकरानी की हैसियत होगी और

मौका आनेपर तुम्हें तुम्हारे औकात से परिचित कराया जाएगा। तुम्हारी भावनाओं को कुचलकर आवाज को दबाया जाएगा। अगर तुम चुपचाप सब सहती रही तब तो ठीक होगा, अगर तुम अपने अधिकारों की बात करोगी, अन्याय के प्रति आवाज उठाओगी, तो इस बात को सहन नहीं किया जाएगा। तुम्हारे समर्पण और त्याग का इनाम तुम्हें काटकर, केरोसिन से जलाकर या तंदूर में भूनकर दिया जाएगा।

3.1.9 शुक्र है तू नहीं है :

प्रस्तुत कविता में ईश्वर के अस्तित्व को झकझौरा है। ईश्वर के इच्छा के बिना पत्ता तक नहीं हिलता, सब कुछ उसकी इच्छा से ही होता है। उस ईश्वर के रहते दलितों का शोषण और उनपर अत्याचार हो रहे हैं। अगर वो बड़ा न्यायी और दयावान है तो दलितों पर अत्याचार क्यों होता है ? यह अपमान भरी जिन्दगी उन्हें क्यों बिताने पडती है? अगर वो सचमुच कही होता तो उसके दलालों का कमीनापन वो देखता परंतु शुक है वो कहीं नहीं है, तु होता, तो मैं तुमसे अपनी यातनाओं का हिसाब मांगता।

3.1.10 दमन की दहलीज पर :

प्रस्तुत कविता में दलितों पर हुए अनन्वीत अत्याचार और दमन का स्वर मुखर हुआ है। मजदूरी को बढ़ाने के लिए, सरकारी जमीन पर कब्जा करते समय, न्याय की मांग करते समय, बहू-बेटियों के हुए बलात्कार के संबंध में, बेगारी के विरोध में जब-जब दलितों ने आवाज उठाई है उन्हें सवर्णोंने उनका खून बहाया है। बिना किसी अपराध के दलितों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा है। उनपर अनगिनत शारिरीक अत्याचार करते हुए बेबस नारिओं की निर्ममता के साथ इज्जत की धज्जियां उडायी है। उनकी चीखों पर सवर्णो ने अट्टाहास किये है। उनकी मौत के बाद उनकी लाशों को भी कुचला गया है। चारो ओर दलितों का यही हाल रहा है। किसी बात के खिलाफ आवाज उठाते ही उनकी चमड़ी उधेड़कर उनका आना जाना तक बंद कर दिया गया है। उनका काम बंद करने के पश्चात् मनुष्य तथा प्राणी तडफ तडफकर मरे हैं। उनका जीवन गुलामों से बदतर हो जाए, वे सवर्णो के आगे मेमने की तरह मिमियाते रहे, उनके

स्वाभिमान को दबाने के भरपूर चेष्टा सवर्णों ने की है। तमाम छल और शोषण के बावजूद आज भी दलित वर्ग मुक्ति के लिए छटपटा रहा है। अपनी अस्मिता और अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। अपने में हौसला भरके हाथों में शस्त्र लेकर दमन की दहलीज पर खडा होकर सवर्णो के साथ लड़ाई की चेतावनी दे रहा है।

3.1.11 गूंगा नहीं था मैं :

प्रस्तुत कविता में दलितों पर हुए अत्याचार का वर्णन किया है। स्कूल के छोटे से लडके ने कवि को तिरस्कृत ढंग से इनशर्ट न करने की चेतावनी दी थी और कवि ने मान लिया। वे विकलांग नही थे, प्रतिकार भी कर सकते थे। उस लडके के अभद्र व्यवहार पर बहुत कुछ बोल सकते थे। लेकिन इससे सवर्ण छात्रों के सवर्ण अहंकार को ठेच पहुँचती। ये बात आग की तरह फैल जाती, चमारों का दिमाग ठिकाने नहीं है, एक चमार लडका जाट लड़के से लड़ रहा था। आपसी मतभेदों को भूलाकर सारे सवर्ण छात्र एक होकर हाँकीयाँ लेकर दलित छात्रोंपर आक्रमण कर देते इसमे दलित छात्रों का ही नुकसान हो जाता। उनका सिर फूटता, हाथ-पैर टूटते और स्कूल के एरिया में झगड़ा करने के जुर्म में दलित छात्रों को ही रसटीकेट किया जा सकता था।

3.1.12 अक्करमाशी :-

प्रस्तुत कविता में अवैध संबधों से उत्पन्न संतान की अवहेलना का वर्णन है। जब अक्करमाशी कहकर कवि का मजाक उडाया जाता है, तो उसका भी खून खौलता है। वो स्पष्ट कहता है, उसके अक्करमाशी बनने के पीछे उसके मां का जाट कर्म नहीं है, तो उसकी विवशता का परिणाम है। पाटील प्रतिष्ठीत जैसे व्यक्ति की औलाद होने के बावजूद उसे बाप के नाम से महरूम रखा जाता है। अगर उसकी मां ने व्यभिचार किया होता, तो बुरे कर्म के निशानी को अपने साथ नहीं रखती, उस गर्भ को गिरवाती, या जन्म के तुरंन्त बाद चुपके से किसी मंदिर की दहलीज पर रख आती या कूडे के ढेर पर फेंकती। अगर वो व्यभिचारिणी होती तो नए-नए कपडे-गहने पहनकर

साज-शृंगार करती, गुलझर्रे उड़ाती। भूखी नंगी और बेबस होकर दर-दर की ठोकरे खाते हुए नहीं भटकती। दो मूठ्ठी अनाज के दानों के लिए किसी पाटील के घर या खेत पर बेगार करने नहीं जाती।

3.3.13 मेरे अधिकार कहां है? :

प्रस्तुत कविता में दलित जीवन की वास्तविकता बयान करते हुए अपने अधिकारों की मांग की है। कवि ने इस कविता में दलित वर्ग और उच्च वर्ग के जीवन स्तर की तुलना की है।

सवर्ण लोग बंगले (कोठियो) में रहते है, तो दलित वर्ग झोपडपट्टियों में जीवनयापन करते है। सवर्णो को सोने के लिए ए.सी. तथा कुलर है, तो दलितों को श्रम की भट्टी मे तपना पड़ता है। सवर्ण दूध-मलाई में नहाते है, परंतु दलित वर्ग रोटी के लिए मोहताज है। वे मालिक है तो ये नौकर है, फिर समता का अस्तित्व कहा है ? पोखर और झील, धन, धरती और मिल सवर्णो की मिलकीयत है। शासन सत्ता पर भी उनका ही अधिकार है। तहसिल, थाना उनके मुठ्ठी में है, साथ ही साथ जाति दंभ के वे अभिमानी है। वे दलितों से घृणा का व्यवहार करते है ।इस विषमता और व्देष में कहीं भी मित्रता का स्थान नहीं है। सवर्णो ने कहा था कि हम सभी भाई-भाई है, हम में कोई भेद नही है, फिर उच्च-नीच, जाति वर्ण कहां से आया। सवर्ण हिंदू होने पर गर्व करने के लिए कहते है, लेकिन हिंदुओं की इस नगरी में दलितों का घर ही नहीं है। सवर्ण चाहते है कि रामराज्य आए, ताकि वे श्रेष्ठ और दलित शूद्र बने रहे। सारे अधिकार बस उनके पास ही सिमट कर रह जाए और दलित वंचनाओंसे जूझते रहे। इस देश में सदियों से शम्बूकों की गर्दन काटने की परंपरा जीवित है। ज्ञान की अपेक्षा करने पर कानो में पिघला शीशा डालते है, जिन्दगी नरक है, पशु से भी बदतर है और जबान पर ताले लगाए गए है। अपने श्वास पर भी दलितों का अधिकार नहीं है। वर्जनाओं को जंजीरों में सदियो से फँसे हुए दलित न जी सकते है, न मर सकते है। तो उनके मौलिक अधिकार कहा है? ये प्रश्न दलित कवि पूछता है।

3.1.14 लाठी :

प्रस्तुत कविता में दलितों की ताड़नाओं का वर्णन प्रस्तुत कविता में मिलता है। दलित जीवन की वेदना यहां मुखर हुई है। कवि के खेतो में पानी देने का वार होने पर भी बदनी जाट जबरन पानी अपने खेत में काटकर ले जाता है। कवि के पिता के द्वारा प्रतिकार करने पर उनकी कमर पर ऐसी लाठी पड़ी की, बहुत दिनों तक उस लाठी की चोट से केवल पिता की नहीं पूरे परिवार की कमर दुखती रही। उन सभी के कलेजों में विवशता की किल चूभती रही। पूर्वाई चलने पर पिता के कमर में इतना दर्द होता की वे आक्रोश करने लगते कसमसाते, साँप से फनकारते, मन मारते रह जाते थे। उसके बाद पुलिस के दबाव से खेत भी बिक गये और पिता भी नहीं रहे। लेकिन जब तक जीवित थे उनकी कमर से वह लाठी का दर्द नहीं गया। पिताजी की मौत को बीस साल पूरे हुए। जिंदगी के बहुत से जख्म अब भर चुके है। परंतु अब भी पूर्वाई चलने पर पिता की कमर में लगी हुई लाठी कवि के सीने में कसकती है।

3.1.15 कलिया की मौत :

संतान की उपेक्षा से मां के मृत्यू का का वर्णन प्रस्तुत कविता में कवि ने किया है। जब कलिया का पति मरा तब उसका बेटा दो बरस का था। उसे दूसरी शादी करने के लिए लोगों ने जोर डाला लेकिन बेटे के भविष्य के बारे में सोचकर दूसरी शादी न करके वह जी तोड़ मेहनत करती रही। निश्चय करते हुए जिंदगी के कष्टों को सहते हुए हर एक काम करती है, लेकिन कभी हार नही मानती।ठंड, तपन आदि को सहकर अपने बेटे को बड़ा करती है। उसका बेटा भी प्रतिभासंपन्न था, देखते देखते बी.ए. कर लेता है और कम्पीटिशन पास करते हुए नौकरी भी मिलती है। नए परिचय, नयी दुनिया के कारण गांव आकर मां से मिलना कम हो जाता है। मां उसे साथ ले जाने के लिए आग्रह करती है, एकमात्र उसका आधार उसका बेटा ही तो है, जिससे दूर रहना उसे मुश्किल लगता है। तब बेटे ने बताया उसकी भी कुछ मजबूरियां है। मां को ले जाकर वह कहा रखेगा, क्योंकि मां तो बैकवर्ड है और वो उस दुनिया में रहता है जहां सभ्य

और फारवर्ड लोग रहते है, इंग्लिश बोलते है। अनपढ़ गवार मां को साथ रखने से उसकी अफसरी में बाधा आ सकती है। कलिया के उम्मींदो पर पानी फेर गया था। बेटे की मां के प्रति तुच्छता देख उसकी शान को बरकरार रखने के लिए वो उसके साथ नहीं रहती। उस रात कलिया अपने हाल पर रोती है। अपने बेटे पर से उसका विश्वास उठ गया था, एक साल तक बेटे ने न कोई चिठ्ठी भेजी थी न स्वयं आया था। लोग बेटे के बारे में तथा कलिया के उसके साथ जाने के संबंध में पुछते थे। सच्चाई कहने पर बेटे की बदनामी होगी, वो उसके लिए मौत के समान है। बेटे को तो लाज शर्म नहीं है। अब कलिया ने लोगो से कहना शुरू किया, उसकी पूरी जिंदगी यही पर बिती है, उस गांव की मिठ्ठी की गंध उसे प्यारी है। अपने स्वाभिमान के रक्षा का उसे यही उपाय सुझता है। पुत्र कितना भी नीच क्यों न हो मां के लिए पुत्र कल्याण ही सबसे बड़ी बात है। एक दिन पुत्र को सपने में देखकर कलिया डर जाती है, उसे देखने के लिए व्याकुल होती है, उसके सीने में बस तड़प और वेदना थी। जिन्दगी भर कष्ट करते हुए शरीर थक गया था। तीन दिन के ज्वर से तड़प कर कलिया मर गयी। कवि सोचते है उन्नति के नामपर हमनें यही पाया है कि माता को माता कहने पर शर्म आती है। ऐंसे पुत्र का धिक्कार है जो मां-बाप के साथ ऐसा सलुख करते है।

3.1.16. अम्बेड़कर की संतान :

अम्बेडकर की संतानों पर होने वाले दमन और शोषण की जंजीरो का वर्णन इस कविता में है। हरिया हड्डियों का ढ़ाँचा दिखता है, वह बीमार नहीं है, वो भूख और बेबसी का शिकार है। अपनी आंखो में आंसूओं की बाढ़ को थामे हुए कृष्णा ने अपने जिस्म का सौदा नहीं किया जालिमों ने उसे लुटा है। जेल के पीछे मंगल छटपटाता है वो कोई चोर, डकैत, हत्यारा नहीं है, जुर्म के खिलाफ आवाज उठाने पर उसे झूठे केस में फसाया है। सदियों से ऐसा ही होता आया है। हरिया, हरखु और मंगल के साथ कृष्णा के जिस्म को नोचा जाता है। भरी दोपहर में दलितों को आग के हवाले किया जाता है। मासूम बीवी, बच्चे चीखते, पुकारते है। भरी पंचायत के सामने युवतियों को नग्न किया

जाता है। उनके विलाप से दिशाए कांपती है। महान भारत में ये सब घटित होता है, लेकिन किसी का कलेजा नहीं फटता, इनपर कोई विद्रोह नहीं करता। न्याय, समता और बंधुता का तुफान यहां नहीं उठता। मंगल आक्रोश से आभास होता है कि अम्बेडकर की संतान इसके बाद शोषण, अत्याचार नहीं सहेगी। कृष्णा के आंसू, हरखू की बेबसी और हरिया के संताप का हिसाब लेगी। साथ ही अन्याय और शोषण के जंजीरो को तोड़कर एक नया इतिहास लिखेगी।

3.1.17. आज का रैदास :

प्रस्तुत कविता में कवि ने सामंती बच्चे और दलित बच्चों की तुलना करते हुए दलितों के आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। सड़क के कोने पर बैठकर रैदास जूतीयां गांठता है। उसके पास उसका छोटासा बेटा 'पूसन' बैठा है, जो फटे - पुराने कपड़े पहने हुए है। वो चाहता है कि वो खूब पढ़े आगे बढ़े परंतु दरिद्रता बाधा बन रही है। उसके अंदर कहीं-ना-कहीं हीनता का अनुभव हो रहा है। सरकारी स्कूल में वो जाता है, लेकिन किताब, कपडे, कापी के अभाव से वो स्कूल नहीं जा पाता। वो अपने पिता के पास आकर बैठता है। रंग बिरंगी पोशाखों में सजे संभ्रात परिवारों के बच्चों को पूसन मायूसी और दीनता से देखता है। उन्हें अंग्रेजी में बोलते हुए सुनकर वह अपने पिता से उसे ऐंसे स्कूल में भेजने की जिद करता है। तब रैदास का कलेजा छल्ली हो जाता है, उसकी आंखे भर आती है। अभाव की वेदना उसके दिल में उठती है। एक टीस उसे विकल कर देती है और उसकी चेतना को हर लेती है। किंकर्त्तव्यमूढ़ होकर कभी उन सभ्रांत बच्चों को तो कभी पूसन की और देखता है। अपने अधनंगे बच्चे को देखकर वह मन मसोस कर रह जाता है। अपनी भूख, बेबसी आदि को कोसकर ईर्ष्या और द्वेष से इस व्यवस्था के जूते में आक्रोश की किल ठोंक देता है।

3.1.18. लालटेन :

प्रस्तुत कविता में अज्ञान, अंधकार को दूर करने वाले लालटेन का प्रतीकात्मक वर्णन किया है। किसी दुकान में लालटेन को देखने के पश्चात् गाँव के छोटे

से घर की कवि को याद आती है। दूसरे घरों में बिजली थी लेकिन कवि के घर में बिजली नहीं थी। कवि की मां काम से लौटने के बाद खाना बनाने से लेकर सारे काम लालटेन की रोशनी में करती थी। पढ़ाई करते समय कवि को लालटेन की रोशनी में लॅम्प का एहसास होता। पहले कैरोसिन ड़बियां जलती थी, मां ने जब सुना की डिबियों का धुँआं फेफड़ो पे जमता है, आंखे खराब होती है। क्योंकि पिताजी के फेफड़ें खराब होकर उनकी मौत हुई थी। उसे धुँऐं का आतंक मां के मन में बैठ गया था। जोड़-तोड़ करके उसने लालटेन खरीदा था। वैसे देखा जाए तो डिबियां के मुकाबले उसमें तेल का खर्च ज्यादा था और घर में तो एक एक पैसे की तंगी थी। परंतु किसी भी दुसरी चीज इन के बदले में आर्थिक तंगी में भी माँ लालटेन के तेल की व्यवस्था करती। हफ्तो तक बिना तेल की सब्जी, सिर्फ उबाले हुए आलू और चावल वे लोग खाते थे। बच्चों के जूठन से मां पेट भरती। कभी कभी खुद भूखी रहती, परंतु कभी भी ऐसा नहीं हुआ कि लालटेन के लिए तेल का अभाव हुआ है। वो स्वयं लालटेन की चिमनी साफ करती। बच्चों की पढ़ाई लिखाई के चिंता में मजदूरी से लेकर कपड़े धोने तक के सभी काम वो करती। बच्चों से कहती है पढ़ाई लिखाई हमारी पूँजी, पढ़ लिखकर उँचा पद नहीं पाओगे तो दूसरों की गुलामी करनी पड़ेगी। बच्चों के इम्तिहान के दिनों में उनके लिए दूध और घी का इंतजाम करती। बच्चों के उत्तीर्ण होने पर उसकी खुशी का पारावर न रहता, पूरे मुहल्लें में बताशे बटवांती। अपने बच्चों के लिए उनके जिंदगी को रोशन करने के लिए जैसे खुद लालटेन बन गयी थी। अपने आप को जलाकर बच्चों को रोशनी दी, जिस रोशनी में हमे अपने जीवन का मार्ग मिला। जिस माँ ने हमें शक्ति और विश्वास का एहसास कराया है। दो भाईयों को सरकारी नौकरी मिल गयी। सब एक एक शहर में आये, बहनों की शादी हुई, बस एक माँ ही गांव मे रह गयी। बेटे, बहूऐं बच्चे सब कुछ है इसके बावजूद भी वह गांव उस टूटे-फूटे घर में अकेली रहती है। साल में एकाध दूसरी बार कोई भाई जाकर सौ- दो सौ रूपए और कपडे देकर आता है। बाकी के दिनों में वो भूखी, नंगी या बीमार रहती है कुछ पता नहीं चलता। बहनें कभी

कभार जाकर खबर लेती है, लेकिन भाईयों में से कोई नहीं जाता। सब अपने घर गृहस्थी में व्यस्त और मस्त है। दुनिया के साथ कम्पीटीशन में आ रहे है, सबका जीवन रोशनी से भरा है। सबके जीवन में सबेरा है, लेकिन मां के जिंदगी में आज भी अंधेरा है।

3.1.19 ओ नए साल :

प्रस्तुत कविता में कवि पुराने साल में हुए अन्याय एंव अत्याचार छोड़कर दमन शोषन को त्यागकर कुछ नया करने की उम्मीद रखता है। नये साल से कवि कहता है, अपने पूर्वजों के राहपर चलने के बजाए कुछ नया करने की मांग करता है। पिछले वर्ष में हुए जुल्म एंव शोषण साथ ही परिश्रमी लोग भूखे न सोये, दलितों का दमन न हो आदि का खयाल रखने के लिए कहता है। जो नेक, निष्ठावान, सदाचारी एवं ईमानदार है, मेहनत करने वाले लेकिन निरक्षर है, भोले भाले है। उन्हें धर्म और नीति के नामपर न छलने की मांग करता है। वुध्दन की बेटी पिछले पांच सालों से दहेज के बिना कुंवारी बैठी है, इस साल भी ऐसा ही न हो इसका ध्यान रखने के लिए कहता है। कई सालों से गोधू का घर साहूकार के यहां गिरवी रखा है, इस बार इसे छूटवाने का विचार करना। चार साल पहले तिलका महतो काम करते करते खान में दबकर मर गया था, उसकी पत्नी को अब तक पति के मौत का मुआवजा नही मिला है, कम से कम इस साल तो मिल जाए इस बात का ध्यान रखना। पिछले साल बीमारी में इलाज के अभाव में बीसना की जवान बीवी मर गयी थी, उसका जीवन दरिद्रता और अभाव के विषाद से भर गया है किसी ओर बीसना का जीवन ऐसा न हो, इस पर मनन करने के लिए कवि कहता है। गरीब मवासी को सरकार की ओर से दो बीघा जमीन मिल गयी थी, उस पर कब्जा करने के लिए वो पुलिस और प्रशासन से गुहार कर रहा है, न्याय के दरवाजे खटखटा रहा है। इस साल उसे न्याय मिल जाए इसके लिए कुछ करने के लिए कहता है।सादपूर और शेअरगढ़ी की घटनांए दुबारा न हो, दलितों को आगे बढ़ने से न रोका जाए।कोई शंकराचार्य दलितों की समानता को नकार कर मैत्री और बंधूता का गला ना घोटे। मंदिर

आदि स्थानों पर उनका प्रवेश न रोके। दलितों के द्वारा अनावरण किये गये किसी सवर्ण की प्रतिमा को दूध और गंगाजल से शुद्ध करने का पाखण्ड ना हो। अन्याय के खिलाफ लड़नेवालों को झूठे मुकदमे में फसाकर जेल में न ठूँसा जाए। इसके लिए कुछ जतन करने के लिए कहता है। खूले आसमान के नीचे रहने वाले भूखे नंगो ने तुम्हारे आने की खुशी के उपलक्ष्य में खाली पेट रहकर भी स्वागत गीत गाये है, पटाखे छोड़े है, वे लोग बिना छत के ना रहे इसका लिहाज रखने के लिए कहता है। यदि ये सब तुमने नहीं किया, दलितों के दमन और शोषण को रोक नही पाये तो तुम अपने पूर्वजों की तरह मानवता के हनन के कलंक से तुम बच नहीं पाओंगे। पूर्वजों की तरह तुम्हारा भी नाम इतिहास के पन्नों में गुमनाम हो जाएगा। तुम चाहते हो कि लोग तुम्हें जानें, सम्मान दें, स्वीकारें तो निश्चित रूप से तुम कुछ नया करना अपने पूर्वजों की राह पर मत चलना।

3.1.20 धर्मग्रंथ्यो को आग लगानी होगी :

जो धर्मग्रंथ विषमताओं का पुरस्कार करते है, उन धर्मग्रंथो के खिलाफ कवि यहा विद्रोह करता है। कवि का मानना है, वे लोग झूठे है जो कहते है देश में जातिवाद आखरी साँस ले रहा है, अस्पृश्यता मर गई है। वे लोग धोकेबाज और मक्कार है, जो लोग कहते है वर्ण व्यवस्था मिट चूकी है। जब तक रामायण, गीता, वेद रहेंगे तब तक वर्ण व्यवस्था रहेगी, अस्पृश्यता रहेगी, जातिवाद रहेगा, समाज में विघटन होता रहेगा और विद्वेष फैलता रहेगा। अगर समाज को प्रगति की ओर ले जाना है, जाति के जहर को मिटाना है, तो तथाकथित धर्मग्रंथो को नकार कर उन्हें आग लगानी होगी। जो ईश्वर वर्णों के अनुसार, कर्मो के अनुसार फल और मोक्ष देता है उसके खिलाफ शुद्ध प्रजा को जगाना होगा। विषमताओं के रक्षा करने वाले किले नष्ट करने होंगे।

3.2 कवितासंग्रह - तिनका-तिनका आग :

जयप्रकाश कर्दम का यह दूसरा कविता-संग्रह है। इसका प्रकाशन 2004 में हुआ। इस काव्य-संग्रह में हमें भूख, यंत्रणा, सांप्रदायिकता, उत्पीड़न और

जातिभेद का बेबाकी वर्णन मिलता है। इस कविता-संग्रह में निम्न कविताएं है।

3.2.1 अप्प दीपो भव :

प्रस्तुत कविता में कवि ने दलित वर्ग को स्वंयप्रकाशित होने का संदेश दिया है। भूखे रहने के बावजूद स्वाभिमान ना छोड़ो, दरिद्रता में लाचार मत बनो, अंधकार में भी निराश और निष्क्रिय न बनो। बीहड़ मार्ग पर भी चला जा सकता है, ऐसा कोई लक्ष्य नहीं जिसे प्राप्त नहीं किया जा सकता, हर दु:ख और समस्या का हल मिल सकता है। अपने अंदर न्यूटन जैसा अदम्य आत्मविश्वास पैदा करो जो लोहे की छड़ी लेकर पृथ्वीपर खड़े होने की जगह लेकर पृथ्वी को हिलाने की बात कहता था। अब्राहम लिंकन से यह सीखो की अभाव में रहकर भी आगे बढ़ सकते है। अम्बेड़कर जी से प्रेरणा लेकर दमन की जंजीरे तोड़ी जा सकती है, मुक्ति का मार्ग पाया जा सकता है। जिंदगी का हर एक युद्ध पहले मस्तिष्क में लढ़ा जाता है। डर कर या हिम्मत हार कर कोई भी मोर्चा नहीं जीता जा सकता। इस बात को याद रखो, बड़े लक्ष्य के साथ ही उँचाई तक पहुँचा जा सकता है। इसलिए लक्ष्य को बढ़ा बनाओं और अंधकार दूर करने की याचना छोड़कर स्वंय प्रकाशित हो जाओ।

3.2.2 अस्मिता :

प्रस्तुत कविता में दलितों की अस्मिता को व्यक्त किया है। मानव अधिकारों के पक्षधर उसकी रक्षा के लिए चिंतित है। वे उसकी रक्षा के लिए सजग और सक्रिय है। मानव अधिकारों का उल्लंघन उन्हें मानव अधिकार की हत्या लगती है। जेल में बंद एक कैदी को सिगारेट न देने के कारण वे संघर्ष करते है। मानव अधिकार के इस हनन के खिलाफ सदियों से करोड़ों दलित वंचित है। लेकिन वे कभी मानव – अधिकार का विषय नहीं बनते। मानव -अधिकारों के पक्षधरों की चिंता ऐसे समय क्यों मूक बनी रहती है। दलितों का उत्पीडन, उनका दर्द, मानव अधिकारों के पक्षधरों को क्यों नही दिखाई देता। एक कैदी व्यक्ति का मानव अधिकार पूरी कौम के मानव अधिकारों से

ज्यादा महत्वपूर्ण है? क्या दलित मनुष्य नहीं है? क्या वे मानव अधिकार के परिधि में नहीं आते? क्या गुडें, तश्कर और हत्यारों से भी दलितों की अस्मिता गयी बीती है? इस तरह के सवाल कवि इस कविता के माध्यम से पूछता है।

3.2.3 संदेश :

प्रस्तुत कविता में कवि ने कबुतर के माध्यम से क्रांति का संदेश दिया। तुम उड़कर दूर देश तक जाओ, इस बार प्रेम का संदेश नहीं, क्रांती का संदेश लेकर जाओ। अखबार की खबरे जिस व्यक्ति के पास नही पहूँचती, उस व्यक्ति तक क्रांति का संदेश लेकर जाने के लिए कवि ने कहा है। कवि यहा कबुतर के माध्यम से हर जगह क्रांति का संदेश पहुँचाना चाहता है।

3.2.4 दरिया :

प्रस्तुत कविता में दरिया के रूप से दलितों के अड़िग आत्मविश्वास के दर्शन होते है। दरिया पत्थरों को चेतावनी देता है कि, वे उसके रास्तों में न आये क्योंकि वे उसे रोक नही पायेंगे, क्योंकि वो दरिया है, उसे राह बनाना आता है। उसका रास्ता रोकने कि जितनी कोशीश करोगे, वो उतने ही वेग से तुमसे टकरायेगा, तुम्हारे जीने को रौंधकर निकल जाएगा। इस कविता के माध्यम से कवि दलित वर्ग में साहस जूठाता है और उनके हौसले बुलंद करने की कोशिश करता है।

3.2.5 तिनका - तिनका आग :

प्रस्तुत कविता में कवि समता का समाज निर्माण करने की चाह रखते है। कवि जिंदगी के बारे में कहता है कि, जिंदगी कविता नहीं है जिसमें प्रणय और सौंदर्य के रस को ढूँढा जाए। जिंदगी रंगमंच भी नहीं है, जिसपर कल्पनाओं का संसार सजाया जाए। विषमताओं से भरे इस जंगल में तिनका-तिनका सुलगती आग जिंदगी है। जिंदगी एक संघर्ष है, जो क्रांति का सूरज उदय होने तक तथा समता का समाज स्थापित होने तक जिसे जारी रहना है।

3.2.6 संघर्ष :

प्रस्तुत कविता में कवि ब्राह्मणवादी शक्तियों के खिलाफ निरंतर संघर्षरत रहना चाहता है। कवि को इस बात की परवाह नहीं कि वह अपनी लड़ाई में शक्तिशाली दुश्मन के खिलाफ अकेला है। उसे इस बात का फक्र है कि वह अपनी फौज का अकेला शिपाई होने के बावजूद न कभी हटा है, न कभी टूटा है। उसका मानना है कि वे लोग हारते है, जो हिम्मत हारते है तथा प्रतिकुलताओं के सामने समर्पन करते है। कवि न कभी हिम्मत हारा है, न भयभीत हुआ। वो कायरों के समान मूक और निष्क्रिय नहीं रहना चाहता। ब्राह्णवादी शक्तियों के खिलाफ उसका संघर्ष निरंतर जारी रहेगा।

3.2.7 क्रांति का बिगुल बजा दो :

प्रस्तुत कविता में कवि क्रांति की चेतावनी देता है। कवि अपने शब्दों में अर्थ भरना चाहता है। उन्हें तीर और तलवार में बदलवाकर बाहर आने के लिए कहता है। शब्दकोश के पिंजरे से शब्दों को निकलकर जनता के मानस में उतरने के लिए वो शब्दों को आव्हान करता है। शब्दों को खोखले नारे बनने से इन्कार करने के लिए कवि उनसे कहता है। परंपरा के अनुसार चलने के बजाए परिवर्तन के दस्तावेज बनने के लिए कवि शब्दों को बताता है। कवि अपने शब्दों को इसके आगे किडे-मकोडे जैसे न बनकर अपने कैचुंली को उतार कर फेंक देने की चेतावनी देता है। कवि अपने शब्दों से कहता है कि वे अपनी ताकद से धरती और आसमान को हिलाकर रख दे। साथ ही अन्यायी और अत्याचारी ऐसी इस दुनिया में शब्दों को आग लगाने के लिए कहता है। अंत में कवि अपने शब्दों को क्रांति का बिगुल बजाने के लिए कहकर परिवर्तन की अपेक्षा रखता है।

3.2.8 हलचल :

प्रस्तुत कविता में कवि सन्नाटा और चुप्पी को तोड़कर हलचल की मांग करते है। इस कविता में एक पात्र है जो दूसरो का मनोरंजन करने के लिए नाचते-नाचते

थक गया है, उसके होंठों से उसकी खुशीओं के गीत निकलना नहीं चाहते उसका गला उसका राग अलापने से इन्कार करने लगा है। क्योंकि अब इसके पैर अपनी धुनों पर थिरकना चाहते है, अपने पैरों की थिरकन से इस धरा को प्रकम्पित करना चाहते है। उसके होंठ नया गीत गाकर समाज को अलोड़ित करना चाहते है। उसका गला नये राग अलापना चाहता है, ताकि उस नये राग की माध्यम से एक शोर पैदा हो और जड़ता सन्नाटा टूटता जाए। जो लोग सदियों से चुप रहते आये है उनकी एक हलचल मचाना चाहते है।

3.2.9. वे महान है :

प्रस्तुत कविता में कविने ब्राह्मणवादी प्रवृत्ति का पर्दाफाश किया है। इस कविता में ब्राह्मणवादी प्रवृत्तियों ने अपने आप को बड़ा उँचा और श्रेष्ठ मानकर हमेशा दलितों पर अन्याय किया है। कवि कहता है, वो नीतिवान है, अपने आप को नीतिवान मानते है और न्याय के खण्ड़र है, जिनसे न्याय की कोई उम्मीद नहीं की जा सकती। वे अन्याय के प्रतिष्ठान है, जिनसे कभी-भी न्याय नहीं मिलेगा। मिथ्याचार और पाखंड़ का व्यवहार करके वो आचारवान बन गये वे अपने आपको सदाचार के इक्के मानते है। वो अपने आपको बड़े ज्ञानी, विद्वान और पंडित मानते है। सभी शास्त्रज्ञान के धुरंधर मानते है, लेकिन एक बात यहाँ पर बताना आवश्यक है, वो श्रम ज्ञान से निपट अंजान है, श्रम के मामले में भोले भंडारी है। वे स्वयं को बड़ा विवेकशील मानते है लेकिन वे तो लोकहित करने के आड़ में उसे तोड़ते है। ऐसा लगता जैसे उनका पूरा जीवन स्वार्थ की दूकान है। वे धर्मानुरागी है, धर्म उनका प्राण है परंतु उनके व्यवहार के कारण ही अधर्म के उपवन खिले है। उनकी नीति के कारण ही उन्होंने सद्धर्म को शमशान बनाया है। इसी कारण वे महान है।

3.2.10 भारत :

प्रस्तुत कविता में 'भारत' देश में स्थित वर्ग भेद और सांप्रदायिकता आदि का साम्राज्य है, इस बात को कवि ने दर्शाया है। अगर न्याय और समानता ढ़ोंग का नाम

भारत है, तो मैं कभी भारत नहीं बनना चाहता। जब तक ब्रह्म सत्य है, और जगत मिथ्या माननेवाली प्रवृत्तियाँ है, कुटुंबकम के नाम पर यदि छलावा है, तो मैं कभी भारत नहीं बनना चाहता। भारत कुछ लोंगो की जागीर है, उनके वर्चस्व में बने हुए किले है। समानता, प्रेम और न्याय का मुखौटा लगाये हुए जागीरदार मुझ जैसे सामान्य व्यक्ति को भारत नहीं बनने देंगे। क्योंकि मेरे भारत बनने से असमानता दूर हो जाएगी दलन और दरिद्रता का नाश होगा। ढोंगीयो की सत्ता हिल जाएगी, उनके किलों की दिवारों में दरारें उत्पन्न होगी। अपनी सत्ता और साम्राज्य को बरकरार रखने के लिए वे कवि के अस्तित्व को ही मिटाकर वर्ण और जाति का रूप जीवित रखेंगे। वर्ग- भेद और सांप्रदायिकता को वो जिंदा रखेंगे और तब तक भारत पनप नहीं सकता उसका विकास नहीं हो सकता। जब तक भारत में इन सारी सत्ताओं का अस्तित्व होगा।

3.2.11 भगवान मत बनाओं :

प्रस्तुत कविता में डॉ. अम्बेडकर को भगवान के बजाय उनकें विचारोंसे प्रेरणा लेने के लिए कवि कहता है तथा अम्बेड़रकजी को भगवान माननेवालों की आँखे खोलने का प्रयास किया है। अम्बेडकर कोई देवता नहीं है, जिसे पूजाघर में बंद कर दिया जाए, और ना ही वे कोई प्रतिमा है, जिसे तोड़कर नष्ट किया जाए। इतिहास के पन्नों में जिसे दफन किया जाए ऐसा कोई नाम अम्बेड़कर नहीं है, बल्कि ये नाम करोड़ों दलितों के अस्मिता का प्रतीक है। उनके जीवन के संगीत की अनुगूँज है। अम्बेड़कर एक जीवंत विचार है। श्रद्धा के आवेग में आकर जीवंत विचारों को दबाने का प्रयास मत करो और इसीलिए अम्बेड़कर को भगवान मत बनाओ।

3.2.12 जन की भाषा में :

प्रस्तुत कविता में देवभाषा संस्कृत पर ब्राह्मणों के एकाधिकार की आलोचना की है। कवि अपने दोस्त से कहता है कि, जो भाषा उसकी नही है उस भाषा में उसके मंगल की कामना मत करो। क्योंकि कवि उस भाषा के लिए हमेशा अछूत रहा है। उस भाषा में कवि अपने दोस्त को अपने लिए प्रशस्ति गीत लिखने से मना करता है,

क्योंकि उसी भाषा में दमन के जीवंत दस्तावेज मिलते है। जिनके शब्द तीर के समान कवि के कलेजों को बींदते है और उसकी चेतना को आहत कर देते है। दलितों के विरोध में खड़ी ऐंसी भाषा का वो धिक्कार करते है क्योंकि उसका उच्चारन करने पर जिव्हा काटी जाती है, गर्म सलाखों से आँखे फोड़ी जाती है। उस भाषा के संस्कारो से कवि नफरत करता है। उस भाषा में अभिनंदन कवि को अपमान लगता है। इस भाषा में किसी का उन्हें संबोधित करना पसंद नहीं है, क्योंकि वो देवता नहीं सामान्य जन और इसीलिए जन की भाषा में बोलने के लिए कवि कहता है।

3.2.13 जाति का व्याकरण :

प्रस्तुत कविता में दलितों के विड़म्बनाओं का परिचय दिया है। मरे हुए पशु के मांस का स्वाद, उसकी खाल निकालते समय की गंध आदि के एहसास के संबंध में कवि पूछता है। चमड़ा कैसे रंग में भिगोया जाता है, उसे कैसे पकाते है, रापी और कतरनी चलाकर कैसे जूते बनाये जाते है, ये तुम्हें पता नहीं है। फिर तुम्हारी और मेरी संवेदना एक ही है, ये कैसे कहते हो ? तुम मेरे सत्य को नहीं जानते मेरे बारें में तुम्हारा अनुभव बहुत अप्रामाणिक है। काश, पेट भरने के लिए तुम्हें भी मरे हुए पशु का मांस खाना पड़ता, अपने सिर पर टट्टी से भरा हुआ टोकरा ढोना पड़ता । गालियाँ और दुत्कार सुननी पड़ती, अपमान भरी बाते सुननी पड़ती तब तुम्हें सही मायने में पता चलता की दलित होने का दर्द क्या होता है। कितना विकट होता है भूख के गणित से जाति का व्याकरण।

3.2.14 बौने :

प्रस्तुत कविता में बौने होने के बावजूद स्वावलंबन और स्वाभिमान का पाठ सिखाया है। कवि को लगता है कि वे वर्ण-व्यवस्था का सम्मान करता है और इसी कारण वे कवि को अवर्ण मानते है। कवि को अस्पृश्य इसलिए घोषित किया गया ताकि वो सवर्णों के साथ न घुलमिल जाए। दीनता से दबाने के लिए इसे हरिजन पुकारा जाता है। दलित उपर उठने का प्रयास न करे इसलिए सदियों से ऐसी साजिशे फलती-फुलती

रही है। सवर्ण शोषक और कवि शोषित, वे श्रेष्ठ और कवि हीन, वो स्वामी और कवि सेवक आज तक बना रहा। परंतु आज अम्बेड़कर जी के विचारों ने कवि की चेतना को जाग्रत किया है। उसे जगाकर उसे स्वालंबन और स्वाभिमान का पाठ पढ़ाया है। सवर्णों के सामने कैसे तनकर खड़े होना है, ये भी सीखा दिया है। अब कवि को हर मामले में बौना बनाने वाले, कवि के सामने बौने लगने लगे है। प्रस्तुत कविता के माध्यम से अम्बेड़कर जी के विचारों का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए दलितों में चेतना जगाने का प्रयास किया है।

3.2.15 कलम :

प्रस्तुत कविता में कवि ने कलम के महत्त्व का प्रतिपादन किया है। अन्याय के किले नष्ट करने के लिए परिवर्तन के गीत कलम से ही लिखे जाते है। कलम सिर्फ कागज पर नहीं चलती वो मासूमों के कलेजों पर भी चलती है। दिहाड़ी मजदूरों की दिहाड़ी कलम से ही काटी जाती है। भूखे जनसामान्य के पेट में कलम से ही खंजर खोप दिया जाता है। कलम से ही किसी मासूम का निलम्बन किया जाता है। बेकसुरों के गर्दन पे कलम ही चलती है। स्कूलो और कॉलेजों में कलम के माध्यम से ही प्रक्टिकल में अव्वल रहने वाले दलित छात्रों को फेल किया जाता है। एकलव्य के समान उनके अंगुठे काटकर उन्हें बेबस और लाचार बना दिया जाता है। कलम से ही झूठा इतिहास लिखकर असली नायकों के बजाय नकली नायकों को महत्व देकर उन्हें महानायक बनाया जाता है। कलम से महाकाव्य, धर्मशास्त्र और स्मृतियाँ लिखी जाती है। दलितों के गुलामी की जंजीरों को और मजबूत बनाया जाता है। उन बेरहम हाथों की कलम तीर, तलवार और खंजर बनती है। अब दलितों को भी कलम का महत्त्व समझना चाहिए। हथियार के रूप में उसका प्रयोग कैसे करना है, ये देखना चाहिए क्योंकि कलम के माध्यम से ही परिवर्तन के गीत लिखे जा सकते है और अन्याय के किलों को नष्ट - भ्रष्ट किया जा सकता है।

3.2.16 घुप्प अंधेरा देखा :

प्रस्तुत कविता में दलितों के जीवन के बीहड़ रास्तों पर अंध:कार के साम्राज्य का वर्णन किया है। कवि ने अपने सपनों में जब इन्सान का चेहरा देखा तब ऐसा लगा को उसके जज्बातों पर आतंक पहरा दे रहा है। जिन्हें उत्तुंग शिखरों तक जाने का जोश था उनके हौसलों पर कठोर व्यंग का पहरा देखा है। कल तक जो एक दूसरे के लिए कुर्बान होने जा रहे थे आज उनके बीच कवि ने मौत का गहरा रिश्ता देखा। कहीं चर्च के मसलों पर बहस हो रही है तो कहीं रामजन्मभूमि पर विवाद चल रहे है। कश्मीर से लेकर गुजरात तक अलगाव की भावना को देखा है। चारो ओर लाशे जमीन पर बिछ रही है, तो कहीं उत्पात मच रहा है। देश और वतन पर मजहब का भाव देखा है। एक पीढ़ी की पीढ़ी जिन्हें रोशन बनाने के लिए मिट गयी, दुर्भाग्य की बात यह है,आज भी उन राहों पर आज घुप्प अंधेरा दिखाई देता है।

3.2.17 सो मत देना :

प्रस्तुत कविता में मजलुमों के अस्मिता के पहरेदार उनके उम्मीदों के आधार उन्हें जगाने से पहले सो मत देना, उनके चेतना को जाग्रत करना, इस प्रकार का संदेश कवि ने शब्दों को दिया है। शब्दों को जागते रहने के लिए और सुबह होने से पहले सो कर अपने अर्थ को न खोने के लिए कवि कहता है। शब्दों को अर्थो से अलग कर देने का खतरा है। विघातक प्रवृत्तियाँ शब्दों को अर्थो से छिनकर उन्हें निरर्थक एवं निस्तेज बनाकर अपना वर्चस्व बनाते रखना चाहते है। बहुत सारे शब्द शास्त्रों, महाकाव्यों और इतिहास ग्रंथों से निकलकर तुम्हारे अर्थ को छिनने के लिए कुछ गांधीवाद की टोपी पहने हुए, कुछ समाजवाद के सुट मे सजधजकर, कोई साम्यवाद का कुर्ता लटकाएँ, कोई नीति और धर्म का प्रवचन देकर कोई अहिंसा और प्रेम का पाठ पढ़ाते हुए, कोई समता का राग अलापते हुए आएंगे। सब के सब तुम्हारे प्रति अपनापन जतायेंगे, तुम्हें गले से लगायेंगे परंतु मन ही मन में सभ्य लोगों की बस्ती में तुम कहा से आयें इस बात पर तिलमिला जाऐंगे। ये प्रवृत्तियाँ चाहती है कि, तुम्हें डरा- धमकाकर,

बहला-फुसलाकर हर हाल में तुम्हारे अर्थों को वे हड़प लेंगे। साथ ही देश और समाज का विघटन करनेवाले तुम्हें इस बस्ती से निकाल बाहर करेंगे। लेकिन शब्दों तुम सावधान हो जाओ। तुम्हारे चारो ओर गिद्धों का डेरा हैं, वो तुम्हें नोचने के लिए घात लगाए बैठे है। इस बात को तुम मत भूलो कि तुम मजलूमों के अस्मिता के पहरेदार हो। तुम उनके उम्मीदों का आधार हो। तुम्हारे सो जाने से उनकी अस्मिता खतरे में पड़ सकती है। ये गिद्ध उन्हें अपनी गिरफ्त में जकड़ सकते है। मजलुमों के जागने से पहले सोकर तुम्हें अर्थ खोना नहीं है।

3.2.18 स्वाभिमान के पथ पर :

प्रस्तुत कविता में कवि ने दलित वर्ग का स्वाभिमान जगाने का प्रयास किया है। कवि कहता है, एक दिन तुम्हारे बच्चे तुमसे पुछेंगे कि, तुम अगर अपनी अधिकारों की लड़ाई अगर लड़ नहीं सकते थे, अपनी अस्मिता की रक्षा नहीं कर सकते थे, अपने उपर उठनेवाला हाथ रोकने का तुममें साहस नहीं था, और तुम हमें सुरक्षित भविष्य नहीं दे सकते थे तो हमें पैदा करने का क्या अधिकार? तुमने हमें अन्याय और उत्पीड़न की इस भट्टी में क्यों झोंका ? इस घृणा और घुटन की जिंदगी लेकर हम क्या करें? आज नहीं तो कल तुम्हें इस प्रश्न का सामना करना पड़ सकता है। इस प्रश्न के जवाब तुम्हारे पास नहीं होंगे और न कोई उपाय होगा। अपने बच्चों के सामने अपनी मजबूरिओं के साथ रोना या अपना माथा पकड़कर बैठना नहीं चाहते तो अपने पूर्वजों से कुछ सिखों। जो अन्याय और उत्पीड़न के खिलाफ कार्यरत रहते थे। कवि कहता है, आज ही अपनी दीनता और हिनता को झटको और साहस के साथ स्वाभिमान के पथ पर कदम बढ़ाओ। अपनी नाखुनों को बढ़ाओ, भालों को पैनाओं और उत्पीड़न का खुँवार सांड अपने नुकीले सींग लिए तुम्हारे बच्चों की ओर बढ़े इससे पहले उस साँड को मौंत की नींद सुला दो।

3.2.19 एक बार फिर आओ :

प्रस्तुत कविता में कवि गौतम बुद्ध को विश्व में आकर धम्म, ध्यान और निर्वाण का ज्ञान देने के लिए कहता है। विश्व में चल रहें मानवता के चीत्कार को, नैतिकता के मूल्य ऱ्हास को, पतनोन्मुख संस्कृति, सभ्यता, वैमनष्यता के विचार को जन-मन से दूर भगाने के लिए गौतम तुम एक बार आओ। इस पृथ्वीपर अंध:कार है, घृणा, हिंसा, अहंकार है, सभी ओर दुखियों का क्रंदन हो रहा है, इस पृथ्वी पर से द्वेष और मालिन्य मिटाने के लिए कवि गौतम को आने के लिए कहता है। यह विश्व बारूद के ढेर पर खड़ा है। नित नये रसायन बनते है कितने उन्नत आयाम हमने छूये है। अपने संहारक खुद हम ही बने है, इस भूमंडल पर शांति बरसाने के लिए गौतम तुम एक बार फिर आओ। समाज में जाति- पाति और मजहब की दीवारे उँची उठ रही है, उग्रवाद, अलगाव और हिंसा को हम प्रश्रय न देकर सब मिलकर इन्हें नकारे। सधर्म और शील पर चलने के लिए कहने के लिए कवि गौतम बुद्ध को फिर एक बार आने के लिए कहता है।

3.2.20 विहान :

प्रस्तुत कविता में कवि ने दलित वर्ग का यथार्थ का चित्रण किया है। उनके चेहरे पर उदासी छायी है, आँखो में दीनता है, हृदय में ग्लानी है, वह भूख से परेशान है, वह अपमान से आहत है, अन्याय से पीड़ित, हिंसा के हलकान से वह जुल्म का आख्यान है। वह हर्ष की अनुभूति, आल्हाद के आवेग और प्रेम के स्पंदन से अनजान है। वह विषादों की खान है, उसकी शीलाओं में क्रंदन, रक्त में तार और उसके अंदर तूफान है, वह हौसलों की चट्टान है, वह परिवर्तन का विहान है। दलितों का यथार्थ वर्णन करते हुए उनमें हौंसला भरने का काम विहान के माध्यम से कवि करता है।

3.2.21 बाँध :

प्रस्तुत कविता में कवि बाढ़ का वर्णन करते हुए नदी को काबू करने के बाद, कहां जाओगे? ऐसा सवाल करता है। नदी तुम उफनती क्यों हो? अपनी सीमा में

रहकर क्यों नहीं बहती ? तुम धीरे-धीरे क्यों नहीं बहती ? तुम लोगों को क्यों बेघर करती हो, उनकी फसले नष्ट करती हो, उनके मकान भी तुम ध्वस्त करती हो। उनके पशुओं को भी तुम अपने साथ बहा ले जाती हो और इस व्यापक विनाश के बाद महामारियाँ छोड़ जाती हो। तुम भूल क्यों जाती हो? बाँध बनाने आने लगे है। लोग से कितनी वेगवती नदीयों पर बाँध बनाते गए है और उन्हें काबू में कर लिया है। यदि किसी दिन तुम पर भी बाँध बनाकर तुम्हें भी काबू में कर लिया तब तुम क्या करोगी ? तब किधर से बहोगी ? प्रस्तुत कविता में बाढ़ के बाद की स्थिति का वर्णन किया है।

3.2.22 विषमता की नदी :

प्रस्तुत कविता में कवि ने भारत में दिखाई देने वाली विषमता का वर्णन किया है और इसे दूर करने के लिए लोगों के दिल जोड़ने का संदेश दिया है। सरकारने ऐलान किया है कि, देश भर में सड़को का जाल बिछेगा और अब गाँवो को जोड़ा जाएगा, नदियों पर पूल बनाये जायेंगे क्योंकि लोगों की दूरियाँ कम हो जाए ताकि जिंदगी की मुश्किले आसान हो जाए। गाँवो में रहने वाले असली भारत के देश हित के लिए दूरियाँ मिटना बहुत जरूरी है। पर केवल भौगोलिक ही नहीं दिलों की भी दूरियाँ मिटनी चाहिए। इस असली भारत में बसता है एक और भारत इस भारत में अलग-अलग उपेक्षित पड़े है।इस भारत को असली भारत के प्रवाह से जोड़ा जाए। उनकी जिन्दगी आसान होने के लिए उपाय खोजे जाए। कौनसी सड़क इन्हें सभ्यता के शहर तक और इन्हें विषमता के नदी से कौनसा पूल पार करवायेगा, ऐसा सवाल कवि यहाँ करता है।कवि ने भौगोलिक दूरियों के साथ दिलों की दूरियाँ भी मिटनी जरूरी माना है।

3.2.23 भारतीय चिंतन की गाडी :

प्रस्तुत कविता में कवि को इक्कीसवीं सदी में भी भारतीय चिंतन की गाड़ी जाति को महत्त्व देती हुई दिखाई देती है। भारतीय चिंतन की गाड़ी में बैठकर हम सभ्यता का सफर तय कर रहे है। यह चिंतन गाड़ी हमारी संस्कृति जितनी पुरानी है। यह गाड़ी अपनी परंपराओं से बंधी होने के कारण सदियों से पुरानी पटरियों पर ही

दौड़ती है। यह गाड़ी उन्ही स्टेशनों पर रूकती है, जिन पर वो पहले से ही रूकती आयी है। इसने अभी तक नये स्टेशन नहीं बनवाये। यह गाड़ी स्टीम पर चले, डीजल से या बिजली से चले लेकिन इसकी गति वहीं पुरानी है। इस गाड़ी के डिब्बे, सीट, शौचालय, पहिए सभी पुराने है। इस गाड़ी का अभी तक कोई कायाकल्प नहीं हुआ है। दुनिया ने चाहे कितने भी नये अविष्कार किए हो,उन्होंने चाँद पर बसने की तैयारी की हो, दुनिया एक विश्वग्राम बनाने की कोशिश कर रहे हो। लेकिन हमारी इस गाड़ी के संचालक, चालक और नियंत्रक इन सबको अपनी पुरानी सभ्यता और संस्कृति पर गर्व है। इसी वजह से इस गाड़ी का रूप, स्वरूप और गति सबकुछ अपरिवर्तनीय है। परम्परावादियों से लेकर गांधीवादी, समाजवादी, साम्यवादी हर प्रकार की विशेषज्ञतावाले इंजीनियर इसकी जाँच करने लगे है। इसकी छोटी-मोटी मरम्मतें भी की गयी है, लेकिन समय के मांग के अनुसार इसकी गति और क्षमता बढ़ाने तथा सुंदर और सुविधाजनक बनाने के लिए इसका नयाकरण हो ऐंसा प्रयास कभी नहीं किया गया। आज समाज में नये-नये इंजीनियर इसकी सोशियल इंजिनियरिंग में जुटे है। इसे फासीवाद के रंग में रंग रहे है ताकि समरसता और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की संस्कृति विकसित हो। धर्मांधता के जंक्शन से लेकर सामंतवाद और पूंजीवाद के स्टेशन, सांप्रदायिकता के स्टेशनपर यह गाड़ी रूकती है। यह चिंतन गाड़ी इक्कीसवीं सदी में भी लोकतंत्र की धुरी पर चलते हुए भी जाति के स्टेशन से बचकर निकलती है।

3.2.24 मैं बनारस जाऊंगा -

प्रस्तुत कविता में कवि मानता है कि जीवन संभावनाओं से भरा हुआ है और इन संभावनाओं को सत्य बनाने की कवि ने ठान ली है। सेमिनार का निमंत्रण कवि को मिला कवि खुश था, उसने सोचा एक बड़े मंच पर अपनी बात करने का मौंका मिला। गर्वनर, मंत्री, सांसद सब सेमिनार में हाजिर होंगे इसी कारण अपनी बात दूर तक जायेगी। लेकिन कवि के मित्र कवि को सेमिनार को जाने से रोक रहे है। वे कहते है, तुम वहां मत जाओ, वह ब्राह्मणवाद का गढ़ है, वहां एक से बढ़कर एक सनातनी रहते

है। वे जाति और छुआछुत के भेद मे डुबे हुए है। वो पानी को भी धो-धोकर पीने वाले है, तुम उनका विरोध करोगे,उनकी संस्कृति और सभ्यता पर टिका-टिप्पणी करोगे। उनके आदर्श और मान्यताओं को नकारोगे, उनके धर्मग्रंथों की धज्जियां उड़ाओंगे, वे तुम्हे बर्दाश्त नही कर पाएंगे।वे वही लोग है, जिन्होंने देश का उप-प्रधानमंत्री जगजीवनराम द्वारा अनावरण की गयी संपूर्णानंद की मूर्ति को दूध और गंगाजल से धोकर शुद्ध किया था। इतने प्रभावशाली व्यक्ति को उन्हेंाने कुछ नहीं समझा, तो तुम किस खेत की मूली हो। तुम्हें वहां जाकर उनकी इच्छानुरूप ही बोलना होगा, अगर वैसा नहीं करोगे तो उनका कोप तुमपर हो जाएगा। इसलिए कवि के दोस्त कवि को रोक रहे है। कवि जानता है कि उसके दोस्त गलत नही कह रहे। वहाँ जाने में जोखीम थी, लेकिन बिना जोखीम उठाए, बिना संघर्ष किए, सरलता से कुछ भी नही पाया जाता। कोई भी युद्ध लड़कर ही जीता जा सकता है, लड़ने के लिए हमें मैदान में उतरना ही होगा। अगर हमें जातिवाद को नष्ट करना है या ब्राह्णवाद को पस्त करना है, तो मैदान में उतरकर दो-दो हाथ करने पड़ेंगे। कवि ने अपने साथियों को समझाया कि, मुझे क्या खतरा हो सकता है? यही की मेरी बाते कुछ लोगों को अप्रिय लगेगी और वो मेरी उपेक्षा करेंगे। इसमें नया तो कुछ भी नहीं, वे तो सदियों से हमारी उपेक्षा ही करते आए है। यही उनका व्यवहार है, यही उनकी सभ्यता है। हजारो साल से वे हमारा अपमान करते आए है, यह उनका धर्म है। मेरी कोई बात उन्हें अप्रिय या असहय लगेगी तो वो मेरे साथ हिंसा का व्यवहार कर सकते है। लेकिन यह कोई नयी बात नहीं है, वे हमेशा से हमारे साथ हिंसा का व्यवहार करते आए है, यही उनका चरित्र है। ऐंसा व्यवहार करेंगे तो इसमें अनपेक्षित ऐसा कुछ नहीं है। अगर कोई नयी बात होगी, तो यह होगी की मेरे विचारों के हथोड़े कुछ लोगों की खोपड़िओं को चरमरा देंगे और उनकी दिमाग की नसों को हिला देंगे। मेरे तर्कों के तीर कुछ विद्यावीरों को धाराशायी कर देंगे। मेरे शब्दों और भावनाओं को आवेग कुछ लोगों की शिराओं में रक्त का संचार तेज कर देंगे। उनकी चेतना के तंतुओं को झनझना देंगे। संभव है कुछ घोर विरोधी लोग भी मेरे

विचारों से प्रभावित होकर मेरे मित्र बन जायेंगे। अंत में कवि कहता है, जीवन संभावनाओं से भरा हुआ है और मैं संभावनाओं को सत्य बनाऊंगा। इस कविता में कवि के मन में अदम्य विश्वास दिखाई देता है।

3.2.25 मनुष्यता :

प्रस्तुत कविता में कवि ने मनुष्यता धर्म को बचाने के लिए सब मानव जाति को एक होने की सलाह दी है। कवि कहता है, गोधरा से झज्झर तक देश सांप्रदायिकता की आग में जल रहा है, जातिवाद की भट्टी में भून रहा है। बस्तियाँ जल रही है, अस्मते लुट रही है। यहाँ लोग मारे जा रहे है, अहिंसा औंधे मुँह पड़ी है और नैतिकता नंगी खड़ी है। हमारे देश के लोकतंत्र की धज्जियां उड़ रही है। यहां पर फांसीवादी ताकते धर्म के नाम पर मनुष्यता को कुचल रही है। लेकिन अफसोस की बात यह है कि यह सब उस देश में हो रहा है, जिसमें मनुष्यता को सबसे बड़ा धर्म माना जाता है। मनुष्यता धर्म को बचाने के लिए हम सब को एक होकर मनुष्यता के दुश्मनों को सबक सिखाना होगा। कवि तमाम मनुष्यता के हितचिंतकों, तमाम बुद्धिजीवियों तथा प्रगतिशील साथियों को एक होकर मनुष्यता के दुश्मनों के खिलाफ लड़ने के लिए बुलाता है। वो उनसे कहता है, अपने गले में लटके जनेऊ तोड़कर, अपनी चोटियों की गांठ खोलकर, अपने माथेपर से त्रिपुण्ड़ मिटाकर एक होने के लिए कहता है। कवि समता और न्याय की रक्षा करनेवालों को एक होने की सलाह देता है और कहता है, हम सब मिलकर एक मजबूत रस्सी में बदल जाए और फंदा बनकर फाँसीवाद के गले में लटक जाए।

3.2.26 अदालत :

प्रस्तुत कविता के माध्यम से दलित वर्ग पर जो अत्याचार एवं शोषण कर रहे है, उस सवर्ण वर्ग को अत्याचार न करने का इशारा दिया है। तुम लोगों ने कोरे कागज पर अंगूठा लगवाकर मेरी घर-जमीन सब लूटते आए हो। तुम मेरे अज्ञान का फायदा लेकर, गोदान के नाम तुमने गाय-भैंस तक ले ली है। तुम हमेशा से मेरी इज्जत

से खेलते आए हो और मुझे दो वक्त की रोटियों का मोहताज बनाया है। तुम मुझपर अत्याचार करते आये हो लेकिन आज तक इसकी रिपोर्ट तक थाने में दर्ज होने नहीं दी। इस तरह सब धोखा-धांधली तुम करते आये हो और आज भी कर रहे हो। तुम इस धोखा-धांधली से पुलिस-प्रशासन और शासन को खरीद सकते हो, अदालत में भी बाइज्जत बरी हो जाते हो। कवि यहाँ इशारा देते हुए कहता है, यह धोखा-धांधली का तुम्हारा खेल अब और नहीं चल पाएगा, तुम हमेशा से हर जगह से बचते आये हो। तुम सारी व्यवस्थाओं को धत्ता-बत्ता कर सकते हो, तुम इन व्यवस्थाओं से बच जाओगे पर मेरी अदालत से नहीं बच पाओगे। तुमने हम पर जो अत्याचार एवं ज्यादतियां की उनकी सजा तुम्हें मेरी अदालत में जरूर मिलेगी।

3.2.27 आधी दुनिया की आवाज :

प्रस्तुत कविता में कवि ने नारी की मुक चेतना को वाणी देने का प्रयास किया है। नारी की दयनीय दशा का चित्रण प्रस्तुत कविता में किया है। वह देवी होकर भी दीन है, वह जननी होते हुए भी हीन मानी जाती है। वह पूजनीय होकर की उपेक्षित है, वह शक्ति है लेकिन अधीन हुई है। जो समाज गर्व से खुद को आधी-दुनिया कहता है, उस समाज में नारी को कोई स्थान नहीं है। क्योंकि स्त्री होने से पहले वो एक जाति है और उसे पहचाना जाता है उसकी जाति से ही। वह कैसे अनुभव करे सब एक होने का, वह कैसे माने खुद को एक आवाज। वह कैसे समझे खुद को आधी दुनिया की आवाज, जिस दुनिया में उसे कोई स्थान नहीं है।

3.2.28 भूख :

कवि भूख को टालने की कोशिश करता नजर आता है, लेकिन भूख उसका पिछा न छोड़कर उसके पास आती है, इसका वर्णन प्रस्तुत कविता में किया है। कवि कहता है, मेरी चाह और इच्छा के विरूद्ध वो एक अरसे से मेरे पीछे पड़ी है। मैने उसको कितनी बार समझाया तुम्हें यहाँ कुछ भी मिलनेवाला नहीं लेकिन फिर-भी वह मेरे पीछे पड़ी है। कवि भूख को सलाह देता है, तुम वहां जाओ जहां तुम्हारी जरूरत पूरी

होती है, जहां लोग तुम्हारा स्वागत करके लोग तुम्हें तृप्त कर देंगे। तुम मुझसे रोटी माँगती हो, वहां जाने से तुम्हें दूध, मलाई, फल और मेवे भी मिलेगे। वहां तुम्हें तुम्हारी जरूरत की सारी चीजे तुम्हारी चाह से पहले मिलेंगी। लेकिन तुम उनकी ओर ध्यान न देकर मेरे साथ लगी रहती हो। ऐसा नहीं है कि, मैं उसे जानता नही हूँ, मैं उसे जानता हूँ, लेकिन मुझे उससे कोई प्यार नहीं है, उससे मुझे कोई आत्मीयता या लगाव नहीं है। मेरा तो उससे यही नाता है कि मैं उसे देखता हूँ और अनुभव कर सकता हूँ। कभी कभी उसके आने से मुझे बहुत परेशानी होती है, उसका आना मुझे अच्छा नही लगता। वह जब भी आती है मुझे कष्ट और पीड़ा देती हैं। मेरे मन के विरूद्ध वो मेरे पीछे पड़ी है। मैं उसे कभी बुलाता भी नही, उसके प्रति मैं हमेशा बेरूखी दिखाकर उससे बचना चाहता हूँ। मैं उसे न बुलाते हुए भी वह मेरे पास आ जाती है, मेरी बात वह सुनती भी नहीं। वह बार-बार मुझे तंग करने के लिए आती है। वह जब भी आती है दबे पाँव न आकर अधिकार और अपनेपन से धड़धड़ाते हुए आती है। जब मैं जिंदगी की मार से आहत होता हूँ, असहाय्य और अभावग्रस्त या अकेला पड़ा होता हूँ, तब वह आकर मेरे पास बहुत देर तक बैठती है, इसी समय वह मुझे अपनी-सी लगती है। मैं उसे उपेक्षा और अकेलेपन के क्षणों में सोचता हूँ कि भेदभाव की इस दुनिया में कम-से-कम भूख तो है, जो मुझे अपना समझती है। इसके लिए मैं अंत्यज और अस्पृश्य नहीं हूँ।

निष्कर्ष -

तृतीय अध्याय 'जयप्रकाश कर्दम के काव्य में चित्रित दलित जीवन' में कर्दम के काव्यसंग्रह - 'गूंगा नहीं था मैं'और 'तिनका-तिनका आग' दोनो का संक्षेप मे आशय दिया है। दलित वर्ग में जो अज्ञान, अंधविश्वास, उनका होनेवाला शोषण, नारी की दयनीय स्थिति, दलितों की जमीन हड़पना आदि प्रवृतियों का चित्रण काव्य-संग्रहों में किया है। समाज में आज भी दलित वर्ग अपना जीवन परंपरागत ढंग से जी रहा है। अर्थाभाव, अशिक्षा, अंधविश्वास, जातीयता आदि के कारण दलित वर्ग अपना जीवन दुर्बलता एवं दरिद्रता से जी रहे है। दलित लोग जी-तोड़ मेहनत करके भी खाली पेट

रहते है, इन्हें पेट भर खाना भी नहीं मिलता। हर वक्त इन्हें दर-दर की ठोकरे खानी पड़ती है, समाज में उन्हें कोई जगह नहीं है। मानव होने के बावजूद भी इनका आज भी कोई वजूद नहीं है। प्राचीन काल से ही ये सवर्ण लोगों के अत्याचार का शिकार बनते आए है। जयप्रकाश कर्दम के कविता-संग्रहों में इसका चित्रण मिलता है।

सवर्ण लोग आज भी दलितों पर अन्याय एवं उनका शोषण कर रहे हैं। दलितों के मौलिक अधिकार छीनकर उन्हें पशु से भी बदतर जीवन जीने के लिए मजबूर कर रहे है। समाज जीवन में छुआछूत, अछूतों को मंदिर प्रवेश निषिद्ध, पाठशाला में भी छुआछूत या सवर्ण छात्रों का मारपीट करना, जमींदारोंद्वारा शोषण, दलित युवतियों के इज्जत से खेलना आदि सभी सामाजिक तत्व जहां दलितों पर अत्याचार होते है। इनका चित्रण प्रस्तुत कविता-संग्रहों में हुआ है।

समाज व्यवस्था में आज भी दलित वर्ग विवशता के कारण परंपरागत व्यवसाय करते हुए नजर आते है। वर्णव्यवस्था के कारण जो काम बूरे माने जाते है, वो काम दलितों को करना पड़ता है। प्रस्तुत कविता-संग्रहो में जयप्रकाश कर्दम ने दलित वर्ग के आर्थिकता का भी चित्रण किया है। कविताओं के माध्यम से कवि सामान्य जन तक डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर जी और गौतम बुद्ध के विचार पहुँचाना चाहते है और दलित वर्ग को अन्याय के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रेरित करता है।

जयप्रकाश कर्दम 'अप्प दिपो भव' कविता से दलित वर्ग को स्वयंप्रकाशित बनने का गौतम बुद्ध का संदेश देते है और दलित वर्ग को स्वाभिमान से जीवन जीने के लिए कहता है। भारतीय समाज व्यवस्था में जातीय भेदाभेद एक कलंक है। जातीयता के कारण दलित वर्ग को सवर्ण लोगों के अनेक अत्याचार तथा यातनाओं का सामना करना पड़ता है। प्रस्तुत कविता-संग्रहों में जातीयता के दर्शन होते है। अपने अत्याचार एवं शोषण के खिलाफ जाग्रत होकर दलित वर्ग आज संघर्ष करता नजर आता है। अपने अस्तित्व के प्रति जाग्रत होकर अम्बेड़कर जी के संदेश का पालन करते हुए शिक्षा

ले रहा है और संगठित होकर अन्याय के खिलाफ संघर्ष करता हुआ नजर आता है। इनका चित्रण इन कविता- संग्रहों में मिलता है।